प्रातःक्लास पितश्री 23-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। ओमशान्ति का अर्थ क्या है? स्वधर्म में बैठो या अपन को आत्मा समझ बैठो तो शान्ति में बैठेंगे। इसको कहा जाता है स्वधर्म में बैठना। भगवानुवाचः स्वधर्म में बैठो। तुम बच्चों का स्वधर्म है शान्त। तुम्हारा निवास स्थान है शान्तिधाम। तो अपन को आत्मा समझ स्वधर्म में बैठो। तुम्हारा बाप तुमको बैठ पढ़ाते हैं। बेहद का बाप बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं। क्योंकि बेहद का सुख देने वाला है। पढ़ाई से सुख मिलता है। अभी बाप कहते है अपन को आत्मा समझ बैठो। बेहद का बाप आया हुआ है तुमको हीरे जैसा बनाने। हीरे जैसे देवी-देवताएं ही होते हैं। वह कब बनते हैं, इतने ऊंच पुरुषोत्तम कैसे बने, यह कोई भी बता न सके सिवाय तुम्हारे। तुमको भी बाप ने बताया है। प्रजापिता ब्रहमा के बच्चे तुम ब्राहमण ठहरे ना। फिर तुमको देवता बनना है। ब्राहमणों की होती है चोटी। तुम शुद्र से ब्राहमण बने हो। जो प्रजापिता ब्रहमा मुख वंशावली हैं, कुख वंशावली तो नहीं हैं। कलियुग में सभी हैं कुख वंशावली। साधु सन्त ऋषि मुनि आद सभी द्वापर से लेकर कुखवंशावली बने हैं। अभी तुम प्रजापिता ब्रहमा के कुमार-कुमारियां ही मुखवंशावली बने हो। वह ब्रहमण तो हैं शुद्र सम्प्रदाय के। वह उत्तम नहीं ठहरे। यह तुम्हारा है सर्वोत्तम कुल। देवताओं से भी उत्तम। क्योंकि तुमको पढ़ाने वाला, मनुष्य से देवता बनाने वाला बाप आया है। बच्चों को बैठ समझाते हैं। क्योंकि भक्ति मार्ग वाले तो यहां आते ही नहीं हैं। यहां आते हो हैं ज्ञान मार्ग वाले। तुम आते हो बेहद के बाप से भक्ति का फल लेने। अभी भक्ति का फल कौन लेंगे? जिसने सब से जास्ती भक्ति की होगी। जैसे स्कूल में जो अच्छे पढ़ते हैं उनको ऊंच पद मिलता है ना। यह भी ऐसे हैं। जिसने सबसे जास्ती भक्ति की होगी वही ज्ञान लेंगे सबसे पहले। क्योंकि भक्ति का फल भगवान को ही आकर देना है। यह अच्छी बात समझने की बातें हैं। अभी तुम पत्थर बुधि से पारस बुधि बनते हो। कलियुगी से सतयुगी, विकारी से निर्विकारी बनते हो। तुम आये ही हो ऐसा बनने लिए। यह भगवान-भगवती हैं तो जरूर इन्हों को भगवान ही पढ़ावेंगे भगवानुवाच परन्तु भगवान किसको कहा जाता है, भगवान तो एक होता है। भगवान कोई सैकड़ों हजारों नहीं होते हैं। मिट्टी भितर में नहीं होते। बाप को न जानने कारण भारत कितना कंगाल बन गया है। अभी बच्चे जानते हैं भारत में इनकी राजधानी थी। इन्हों के बाल-बच्चे जो भी थे, राजधानी के मालिक थे। तुम यहां आये ही इस राजधानी के मालिक बनने लिए। यह अभी तो नहीं हैं ना। भारत में इन्हों का राज्य था। बच्चों को समझाया जाता है जब इन देवी-देवताओं की राजधानी थी सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी तब और कोई धर्म नहीं था। इस समय फिर और सभी धर्म हैं। यह धर्म है नहीं। यह तो फाउन्डेशन है, जिसको धुर कहा जाता है। इस समय मनुष्यसृष्टि रूपी झाड़ का धुर सड़ गया है। बाकी सभी खड़े हैं। अभी उनसभी की आयु पूरी होती है। यह मनुष्य सृष्टि रूपी वैराईटी झाड़ है। भिन्न2 नाम-रूप देश-काल। अनेकानेक हैं ना। कितना बड़ा झाड़ है। बाप समझाते हैं कल्प2 यह झाड़ जड़-जड़ीभूत तमोप्रधान हो जाता है तब फिर मैं आता हूं। तुम मुझे पुकारते हो बाबा आओ हम पतितों को आकर पावन बनाओ। हे पतित-पावन, जब पतित पावन कहते तो निराकारी बाप ही याद आते हैं। साकारी तो कब याद नहीं आवेंगा। पतित-पावन सदगति दाता एकही हैं जब सतयुग था तो तुम्हारी सदगति थी। अभी तुम पुरुषोत्तम संगम युग पर बैठे हो। बाकी और सभी कलियुग में हैं। तुम हो पुरुषोत्तम संगम युग पर। उत्तम ते उत्तम वा ऊंच ते ऊंच गाया जाता है ना। एक भगवान। ऊंच ऊंच तेरा नाम। ऊंच ते ऊंच ते रा थावं। ऊंच ते ऊंच रहते हैं परमधाम में। यह बड़ा सहज समझने का है। सतयुग त्रेता फिर है संगम युग। इनका भी किसको पता नहीं है। जो भी मनुष्य मात्र हैं उनको कलियुगी शुद्र पतित सम्प्रदाय कहेंगे। सतयुग में तो कोई भी पतित होता ही नहीं। शास्त्रों में कथायें लिख दी हैं। रावण ने सीता को चुराया। फिर ऋषि पाय बच्चे हुये। यह सभी है काहनी। भक्ति मार्ग की बातें सुन सुन कर तुम्हारी हालत क्या हो गई है। यहभी ड्रामा में भक्ति मार्ग बना हुआ है। ऐसे नहीं कह सकते बाबा फिर यह भक्ति मार्ग

23-5-68

क्यों बनाया। बाप कहते हैं यह अनादी बना बनाया ड्रामा है। सुख औरदुःख, हार और जीतका खेल है। यह कोई मनुष्य ने नहीं बनाया। यह तो अनादी हैं। मैं बैठ इस ड्रामा का राज़ समझाता हूं। यह अनादी ड्रामा हैं। मैं ने बनाया तो फिर कहेंगे कब बनाया। बाप कहते ही हैं अनादी हैं। अनादी अविनाशी ड्रामा है ना। शुरू कब होता है यह सवाल नहीं हो सकता। यह तो अनादी बना बनाया ड्रामा हैं। अगर कहें फलाने समय शुरू हुआ तो फिर कहेंगे बन्द कब होगा। परन्तु नहीं यह तो चक्र चलता ही रहता है। तुम चित्र भी बनाते हो। ब्रहमा विष्णु शंकर का भी। यह देवतायें त्रिमूर्ति दिखाते हैं। उसमें भी ऊंच ते ऊंच बाप को दिखलाते नहीं हैं। उनको अलग कर देते हैं। ब्रहमा द्वारा स्थापना सो तो अभी हो रही हैं। राजधानी में तो सभी प्रकार के पद होते हैं। प्रजीडेनट है, प्राईम मिनिस्टर है, चीफ मिनिस्टर है, यह सभी होते हैं राय देने वाले। सतयुग में कोई राय देने वाला चाहिए नहीं। अभी तुमको जो राय अथवा मत मिलती है वह अविनाशी बन जाता है। अभीदेखो कितने राय देने वाले हैं। ढेर के ढेर हैं। पैसे खर्च कर मिनिस्टर आद बनते हैं राय देने लिए। खुद गवर्मेन्ट भी कहता हैं यह क्रप्टिव है। बहुत खाते हैं। यह तो है हीकलियुग। वहां तो ऐसे होती ही नहीं वज़ीर आद की दरकार हो नहीं। अभी तुमको बाप से श्रीमत मिलती हैं। फिर जब तुम महाराजा-महारानी बनते हो तो वहां श्रीमत की दरकार नहीं। यह मत 21 जन्म लिए मिलती हैं। तुम्हारी सदगति हो जाती हैं। वहां तो गुरु की दरकार ही नहीं। सतयुग में न गुरु न वजीर होता है। अभी तुमको श्रीमत मिलती है अविनाशी 21 पीढ़ी लिए। 21 बुढ़ापे लिए। बूढ़ा बने फिर शरीर छोड़ जाकर बच्चा बनेंगे। जैसे सर्प एक खोल छोड़ दूसरा लेती हैं। जनावरों का भी मिशाल दिया जाताहै ना। मनुष्यों में तो जरा भी अकल नहीं हैं। क्योंकि पत्थर बुधि हैं। बापसमझाते हैं मीठे2 बच्चों तुम ब्राहमण -ब्राहमणियां हो। तुम जानते हो बाहर वाले जो हैं वह सभी हैं भ्रष्टाचारी। विष्टा के कीड़े। मूत पतित ग्रन्थ में भी पढ़ते, सुनते तोसभी हैं ना। मूत पतित कपड़ धोये। बाप को बुलाते हैं आकर मूत पतित कपड़ा धोकर पवित्र बनाओ हम आत्माओं को। भाईयों ने पुकारा है ना। हे पतित-पावन, हम सभी आत्माओं के बाप आकर कपड़ा साफ करो। शरीर को तो नहीं धोना है। आत्माओं को धोना है। क्योंकि आत्मा ही पतित बनी है। पतित आत्माओं को आकर पावन बनाओ। परन्तु शास्त्रों में लिख दिय है मूत पतित कपड़ धोये तो सन्यासियों ने उल्टा-सुल्टा उठा लिया है समझते हैं शरीरमूत पतित बना है इसलिए गंगास्नान करो। परन्तु आत्मा तो उन से पावन हो न सके। बाप को कहते हैं हे पतित पावन आओ। नदी को तो नहीं कहते। बाबा ने कारण समझाया है मुंझ क्यों हुई है। क्योंकि ग्रन्थ में है ना मूत पतित कपड़ धोये। बाप ने समझाया है बच्चे 84 जन्ममैक्सीमम। इन से जास्ती85 जन्म ले नहीं सकते। मिनीमम है एक। एक से कम तो होता ही नहीं। 84 जन्म भी सभी नहीं लेते हैं। तो बाप बच्चों को समझाते हैंमीठे2 बच्चों मुझे यहां आनापड़ता है। मैं ही ज्ञान का सागर मनुष्य सृष्टि का बीज रूप हूं। सत-चित आनन्द स्वरूप ज्ञान कासागर, सुख का सागर शान्ति का सागर हूं। तुम वर्सा लेते हो। बेहद के बापसे बेहद का वर्सा। हद के बाप से हद का वर्सा मिलता है। हद के वर्सेक्र में दुःख होते हैं। इसलिए बाप को याद करते हैं। अथाह सुख है। बाप ने कहा हैयह 5विकारों रूपी रावण तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन है। यह आदि मध्य अन्तदुःख देते हैं। हे मीठे2 बच्चों। अगर इस जन्म में ब्राहमण बन कर काम पर जीत पहने तो जगतजीत बनेंगे। तुम पवित्रता की धारणा करते हो यह बनने लिए। तुम आये ही हो आदी सनातन देवी देवताधर्म की स्थापना करने। यह हैपुरुषोत्तम पुरुषोत्तम संगमयुग। इसमें पुरुषार्थ कर पावन बनना हैं। जितने कल्प पहले पावन बने थे सूर्यवंशी चन्द्रवंशी की वह जरूर बनेंगे। टाईम तो लगता है ना। बाप युक्ति बहुत सहज बताते हैं। अभी बाप के बच्चे तो बने हो। यहां तुम किसके पासआये हो? क्या कोई शरीरधारी साधु सन्त के पास आये हो। नहीं। तुमकहेंगे हम शिव बाबा के पास आये हैं। वह तो है निराकार। उस ने इस शरीर का लोनलिया है।

28.5.68

वह खुद बतलाते हैं यह है बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त का जन्म। 84 जन्मों के अन्त में मैं आया हूं। तो यह हो गया सब से जास्ती पतित। मैं आता ही हूं पुरानी रावण के आसुरी दुनिया में और फिर उनके शरीर में जो अपने जन्मों को नहीं जानते। यह तो बहुत जन्मों के अन्त का जन्म जब उनकी वानप्रस्त अवस्था है तब मैं प्रवेश करता हूं। गुरु भी हमेशा वानप्रस्त अवस्था में किया जाता है। कहते हैं साठ तो लगे लाठ। घर में रहेंगे तो बच्चों की लाठ लगेंगी। इसलिए भागो घर से। बच्चे ऐसे होते हैं जो बाप को लाठी मारने देरी नहीं करते। कहेंगे कहां मरे तो धन हमको मिले। वानप्रस्तियों के बहुत सतसंग आद होते हैं। बाप ने समझाया है तुम बच्चों ने बड़ी भूल की है क्यों कि तुम तो पत्थर बुधि हो नाजिनको तुम ने गुरु किया है वह तुमकोआरफन्न और बिधवाबना कर चले जाते हैं। उनको फिर तुम ने गुरु बनाया है सदगति के लिए। तुम पुकारते भी हो हे पतित पावन बाबा सब की सदगति दाता तो एक है ना। वह आवेंगे भी जरूर संगम पर। सतयुग में सदगति पाते हो तो बाकी सभी शान्ति में रहते हैं। इनको कहा जाता है सब का सदगति। और तो कोई है नहीं। न किसको श्रीश्री कह सकते न श्री श्री कह सकते हैं। श्री अर्थात श्रेष्ठ होते हैं देवतायें। श्री ल0-श्री ना0 उनको कहा जाता है। इन्हों को बनाने वाला कौन? श्री श्री शिव बाबा। श्री2 शिव बाबाको ही कहेंगे। जो सर्व को सदगति करते हैं। जो अपन को यहां श्री कहलाते हैं उनकी भी सदगति करते हैं। तो बाप भूलें सिध कर बतलाते हैं। तुम इतने गिरे कैसे। फिर भी ऐसा होगा तुम वही गुरु आद करेंगे। चक्र फिरे वही रिपीट होगा। भक्ति मार्ग के कितने ढेर चित्र हैं। कितने शास्त्र आद हैं। अनेकानेक चित्र बने हैं। क्या2 दन्तकथायें बैठ सुनाते हैं। तुम सभी उनके शिष्य बन सत सत करते रहते हो। तो देखोकितने झूठे बन गये हो। झूठी माया झूठी काया .... अभी मिलना चाहिए सच्च। सत्य तो एक को ही कहा जाता है। बाप खुद कहते हैं मैं तुमकोसच्ची कथासुनाता हूं। बाकी तो जोसभी हैं भक्ति मार्ग के झूठी कथायें। जो तुम भक्ति मार्ग में सुनते आये होजन्म व जन्म। रामायण भागवद आद सभी में दन्तकथायें। फायदा कुछ भी नहीं। इन बातों को तुम ही समझते हो। तुम्हारे में भी कोई भक्त बैठा हुआ होगा तो समझेंगे नहीं। पत्थर बुधि है ना। भक्ति मार्ग ही है पत्थर मार्ग। अभी तुमको परसनाथ बनाया जाता है। भक्तिमार्ग वाले यह बातें सुनने भी नहीं चाहते हैं। कहेंगे हमको तो गुरु से शान्ति मिलती है। स्थाई तो मिल न सके। तुम स्वर्ग में रहते हो तोवहां हो सुखधाम में। पवित्रतासुख शान्ति सभी वहां हैं। वहां झगड़ा आद होता नहीं। बाकी इतने सभी शान्तिधाममें चले जाते हैं। भल सतयुग को लाखों बर्ष कह देते हैं। बाप कहते हैं लाखों बर्ष की बात ही नहीं। कहते भी हैं मनुष्य की 84 जन्म। दिन प्रति दिन सीढ़ी नीचे उतरते तमोप्रधान बनते जावेंगे। फिर बच्चे भी विचू खिण्डन मिशल पैदा होते हैं। तो बाप समझाते हैं यह सब ड्रामा बना हुआ है। एक्टर होकर ड्रामा के क्रियटर डायरेक्टर मुख्य एक्टरस को जाने तो जंगली जनावर कहेंगे। जनावरों की ड्रामादेखते हैं क्या। बाप कहते हैं इस बेहद के ड्रामा को कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते। यह बाप ही आकर समझाते हैं। कहते भी हैं हम आत्मा शरीर लेकर पार्ट बजाती हैं। तो नाटक हुआ ना। नाटक के मुख्य एक्टर कौन है, कोई बता न सके। अभी तुम बच्चे ही जानते हो। यह बेहद का ड्रामा कैसे जूं मिशल चलता रहता है। टिक2 होती रहती है। मुख्य है ऊंच ते ऊंच बाबा। जो आकर समझाते हैं। और सर्व की सदगति भी देते हैं। सतयुग में दूसरे कोई होते ही नहीं। बहुत ही थोड़े होते हैं। वह थोड़े जो होंगे उन्हों ने ही सब से जास्ती भक्ति की होगी। तुम्हारे पास प्रदर्शनी म्युजियम में आवेंगे वह जिन्हों ने बहुत भक्तिकी है शिव की। एक की भक्ति करना, इसको कहा जाता है अव्यभिचारी भक्ति। फिर बहुतों की भक्ति करतेव्यभिचारी बन पड़ते हैं। अभी तो बिल्कुल ही तमोप्रधान भक्ति है। पहले सतोप्रधान भक्ति थी। फिर सतो रजो तमो में आये हैं। सीढ़ी उतरते2 तमोप्रधान बन गये हैं। जिस कारण सभी तमोप्रधान बन जाते हैं। ऐसी हालत जब होती है तब ही बाप आते हैं सभी कोसतोप्रधान बनाने। पार्ट तो सभी को मिला हुआ है

23.5.68

बेहद का एक ही ड्रामा है। इस समय जो भी एक्टर्स हैं उन में से एक भी मोक्ष को पा नहीं सकते। कहते हैं हमको मोक्ष चाहिए। यहां हम आने नहीं चाहते हैं। क्योंकि दुःख है। सतयुग में ऐसे कब नहीं कहेंगे। तुम कहते हो यह तो बना बनाया ड्रामा है। एक को भी मोक्ष नहीं मिल सकता। ऐसे बहुत होंगे जिनको गुरु कहते होंगे कि मोक्षमिल सकता है। बाप कहते हैं मोक्ष हो नहो सकता। सब से जास्ती आना जाना तो हमको होता है। क्योंकि यह तो सीढ़ी है ना। सीढ़ी उतरनी होती है। तुम्हारी सीढ़ी है सब से बड़ी। सेकण्ड में चढ़ते हो। फिर उतरने की सीढ़ी है। जो पीछे आते हैं उनकी सीढ़ी छोटी। अभी तुम यह कोई मनुष्य से नहीं सुनते हो। मनुष्य कब भगवान नहीं हो सकता। अगर अपन को भगवान कहे तो वह है हिरण्य कश्यपु। तुम ने कथाएं भी सुनी है। अभी भी तुमको कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी हैं। आत्मा को कोई लेप-छेप नहीं लगता। जो चाहो सो खाओ-पीओ मौज़ करो। मास मदिरा आद जो चाहो सो खाओ। इतना बड़ा महर्षि कितने ग्राहक विलायत से फंसा कर ले आते हैं। वह भी कहते हैं सभी कुछ खाओ-पीओ। यहां तो वह बात नहीं हैं। बाप कहते हैं विष न खाओ। यह अमृत तुमको एक वार ही मिलता है। जब ज्ञान सागर आते हैं। सर्व की सदगति दाता पतित-पावन बाप ही है। मनुष्य को पतित-पावन नहीं कह सकते। गीता में कृष्ण का नाम डाल गीता को झूठा बना दिया है। तुम जानते हो कृष्ण जो गोरा था वही फिर सांवरा बना है। परन्तु वह नाम रूप देश-काल तो नहीं है ना। शास्त्रों में सभी हैं झूठ। सच्च की रत्ती नहीं। भगवान तो एक ही होता है। वह है सभी आत्माओं का बाप। उनको ही सभी याद करते हैं हे बाबा हमारे दुःख हर कर सुख दो। आत्मा सुख चाहती है। आत्मा बाप को याद करती है। परन्तु जानते बिल्कुल ही नहीं। जैसे इडियट्स हैं। उसमें भी सब से जास्ती इडियट्स तुम बने हो। तुम ही गिरे हो फिर बाप तुमको ही ऊंच बनाते हैं। बाप कहते हैं मैं हूं ग़रीब निवाज़। दान भी हमेशा ग़रीबों को किया जाता है ना। तुम भी पापात्मा थे। तो तुम्हारा धंधा ही ऐसा था। ईश्वर अर्थ दान करते थे। देते तो पापात्माओं को थे। तो तुम भी पापात्मा बनते गये हो। सीढ़ी नीचे उतरते आये हो। काली पर बल चढ़ते हैं ना वह भी जीवघात करते हैं ना। वह कोई पूण्यात्मा थोड़े ही बनेंगा। पूण्यात्मा बनाने वाला एक ही बाप है। सभी को पूण्यात्मा बनाते हैं। इस समय साधु सन्त महात्मा आद सभी पतित हैं। भगवान ने भी कहा है ना मैं साधुओं का भी उधार करने आता हूं। वह तो किसकी सदगति कर न सके। वह हैं भक्ति मार्गके अनेकानेक गुरु। पति के लिए भी कहते हैं तुम्हारा गुरु ईश्वर है। उनकी मत पर चलना। अभी बाप कहते हैं तुम मेरी मत पर चलो। कुमारी पवित्र हैं तब तो उनको पूजते हैं। तुम कुमारियों ने ही भारत को हेविन बनाया है। खिलाते भी कुमारियां को हैं। महिमा भी गाते हैं बन्देमातरम्। ऐसे कबसुना बन्दे पितरम्?

बेहद का बाप सृष्टि चक्र का राज़ बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं मैं तो शास्त्र आद कुछ नहीं पढ़ता हूं। मैं तो ज्ञान का सागर हूं ना। बाकी वह सभी हैं शास्त्रों के अथार्टी। सागर नहीं है। मैं तुमको सभी वेदों शास्त्रों का सार ब्रहमा तन द्वारा बैठ समझाता हूं। भक्ति किसको कहा जाता है ज्ञान किसको कहा जाता है अभी तुम समझते हो। भक्ति है अंधियारा। बाप कहते हैं मैं आता हूं जब भक्ति का अन्त होता है। मेरी तिथ तारीख नहीं है। अभी बच्चों को राय दी जाती है बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर यह शरीर छूट जाये। ऐसे जो बनेंगे वही स्कालरशिप लेंगे। तुम्हारी बुधि में है अभी हमको वापस जाना है। सब कहेंगे हम एक शरीर छोड़ नया लेते हैं। दुःख की बात ही नहीं। यहां तो छी छी शरीर हैं तो तुम समझते हो इनको छोड़ कर जावेंगे अपने घर। बाप को याद करना है जरूर। वह निराकार बाप ही ज्ञान का सागर है। एक ही होता है। आकर सभी की सदगति करते हैं। कहते हैं साधुओं का भी उधार करता हूं। दुर्गति करने लिए यह जो तुम्हारे मालिक हैं। अभी इन्हों को छोड़ो। एक बाप से ही योग लगाओ। तुम सभी आत्माओं को बाप से वसा लेने का हक है। अपन को आत्मा समझ देहीअभिमानी बनो और बाप को याद करो तो पापकट जायेंगे। बच्चों को गुडमार्निंग आरनमस्ते।